"सतिगुर की शरण"

- सरनि जोग सुनि सरनी आए । करि किरपा प्रभ आप मिलाए । मिटि गए बैर भए सभ रेन । अमृत नाम साध संग लैन ।

(5-285)

अर्थः- हे प्रभू ! ये सुन के तू दर आए की बाँह थामने में समर्थ है । हम तेरे दर पर आए थे । तूने मेहर करके हमें अपने साथ मिला लिया है । अब हमारे वैर मिट गए हैं हम सब के पैरों की ख़ाक हो गए हैं अब साध - संगति में अमर करने वाला नाम जप रहे हैं ।

- महिमा ताकी केतक गनीऐ जन पारब्रहम रंगि राते । सूख सहज आनंद तिना संग उन समसरि अवर न दाते ।1।

अर्थः- हे भाई ! संत जन परमात्मा के प्यार - रंग में रंगे रहते हैं उनके आत्मिक बड़प्पन का अंदाजा नहीं लगाया जा सकता । उनकी संगति में रहने से आत्मिक अडोलता के सुख आनंद प्राप्त होते हैं उनके बराबर का और कोई दानी नहीं हो सकता ।

जगत उधारण सेई आए जो जन दरस पिआसा । उन की सरण परै सो तरिआ संतसंग पूरन आसा ।2।

अर्थः- हे भाई ! जिन संत जनों को स्वयं परमात्मा की चाहत लगी रहे वही जगत के जीवों को विकारों से बचाने आए समझो । उनकी शरण जो मनुष्य आ जाता है वह संसार समुंद्र से पार लांघ जाता है । हे भाई ! संत जनों की संगति में रहने से सब आशाएं पूरी हो जाती हैं ।

राज जोबन अवध जो दीसै सभ किछ जग महि घाटिआ । नाम निधान सद नवतन निरमल इह नानक हरि धन खाटिआ ।4। (5-207)

अर्थः- हे नानक ! कह हे भाई ! हकूमत, जवानी, उम्र जो कुछ भी जगत में संभालने लायक दिखाई देता है ये घटता ही जाता है । परमात्मा का नाम ही एक ऐसा खजाना है जो सदा नया रहता है और है भी पवित्र भाव इस खजाने से मन बिगड़ने की बजाय पवित्र होता जाता है । संत जन ये नाम धन ही सदा कमाते रहते हैं ।

• जगि हउमै मैल दुख पाइआ गल लागी दूजै भाई । मल हउमै धोती किवै न उतरै जे सउ तीरथ नाइ ।

अर्थः- जगत में अहम् की मैल के कारण सदा दुख ही सहना पड़ा है क्योंकि माया में प्यार के कारन जगत को विकारों की मैल चिपकी रहती है । अगर मनुष्य सौ तीर्थों पर भी स्नान करे तो भी ऐसे किसी तरीके से यह अहंकार की मैल धोने से मन से दूर नहीं होती ।

बहु बिध करम कमावदे दूणी मल लागी आई । पड़िऐ मैल न उतरै पूछहु गिआनीआ जाई ।1।

अर्थः- लोग कई किस्मों के नियत धार्मिक कर्म करते हैं । इस तरह बल्कि पहले से दुगनी अहं की मैल आ लगती है । विद्या आदि पढ़ने से भी यह मैल दूर नहीं होती बेशक पढ़े - लिखे लोगों को जा के पूछ लो अर्थात पढ़े हुए लोगों को विद्या का गुमान ही बना रहता है ।

मन मेरे गुर सरणि आवै ता निरमल होई । मनमुख हरि हरि करि थके मैल न सकी धोई ।1। रहाउ ।

अर्थः- हे मेरे मन ! जब मनुष्य गुरू की शरण में आता है तब ही पवित्र होता है । अपने मन के पीछे चलने वाले लोग राम - राम कह कह के थक जाते हैं फिर भी अहम् की मैल उनसे धोई नहीं जा सकती ।

मनि मैले भगति न होवई नाम न पाइआ जाई । मनमुख मैले मैले मुए जासनि पति गवाई ।

अर्थः- अहम् की मैल से भरे हुए मन से परमात्मा की भक्ति नहीं हो सकती इस तरह परमात्मा का नाम हासिल नहीं होता हृदय में टिक नहीं सकता । अपने मन के पीछे चलने वाले लोग सदा अहंकार के कारण मलीन मन रहते हैं और आत्मिक मौत मरे रहते हैं वह दुनिया से इज्जत गवा के ही जाएंगे ।

गुर परसादी मनि वसै मल हउमै जाई समाई । जिउ अंधेरै दीपक बालीऐ तिउ गुर गिआन अगिआन तजाई ।2।

अर्थः- गुरू की कृपा से जिस मनुष्य के मन में परमात्मा का नाम बस जाता है उस का अहंकार दूर हो जाता है वह प्रभु चरणों में लीन रहता है । जैसे अगर अंधेरे में दिया जला दें तो अंधेरा दूर हो जाता है ऐसे ही गुरू की बख्शी हुई समझ की बरकत से अहम् - रूप बेसमझी का अंधकार दूर हो जाता है ।

हम कीआ हम करहगे हम मूरख गावार । करणै वाला विसरिआ दूजै भाई पिआर ।

अर्थः- यह काम 'हमने' किया है 'हम' ही कर सकते हैं । इस तरह "मैं - मैं' 'हम - हम' कहने वाले लोग मूर्ख उजड्ड होते हैं उन्हें पैदा करने वाला परमात्मा भूला रहता है । वे सदा माया से ही प्यार डाल के रखते हैं ।

माइआ जेवड दुख नही सभि भवि थके संसार । गुरमती सुख पाईऐ सच नाम उर धारि ।3।

अर्थः- दुनिया में माया के मोह जितना और कोई दुख नहीं है । माया के मोह में फंस के सारे जीव माया की खातर भटक - भटक के खपते रहते हैं । गुरू की मत पर चलने से सदा स्थिर प्रभु का नाम हृदय में टिका के ही आत्मिक आनन्द मिलता है ।

जिस नो मेले सो मिलै हउ तिस बलिहारे जाउ । ऐ मन भगती रतिआ सच बाणी निज थाउ ।

अर्थः- पर जीवों के भी क्या बस ? जिस भाग्यशाली मनुष्य को प्रभु अपने चरणों में जोड़ता है वही प्रभु को मिलता है । मैं ऐसे शख्स से कुर्बान जाता हूं । हे मन ! परमात्मा की कृपा जो मनुष्य प्रभु की भक्ति के रंग में रंगे जाते हैं प्रभु का सदा स्थिर नाम ही जिन की बाणी बन जाती है । उनको 'अपना घर' प्राप्त हो जाता है अर्थात वह सदा उस आत्मिक ठिकाने में टिके रहते हैं जहां माया का मोह उन्हें धक्का नहीं दे सकता ।

मनि रते जिहबा रती हरि गुण सचे गाउ । नानक नाम न वीसरै सचे माहि समाउ ।4। (3-39)

अर्थः- मैं श्रद्धा से प्रभु के चरण पकड़ती हूँ और गुरू के आगे विनती करती हूँ कि मुझे परमेश्वर - पति से मिलन करवा दे उनको हे नानक ! परमात्मा का नाम कभी नहीं भूलता वह सदा स्थिर प्रभु में लीन रहते हैं ।

बिन भागा सतिगुर न मिलै घरि बैठिआ निकट नित पासि ।
होइ निमाणी ढहि पवा पूरे सतिगुर पासि ।

अर्थः- अच्छी किस्मत के बगैर गुरू नहीं मिलता और गुरू के बिना परमात्मा का मिलाप नहीं होता चाहे हमारे हृदय में बैठा हर वक्त हमारे नजदीक है हमारे पास है । मेरा मन चाहता है कि मैं और मान - सम्मान आसरे छोड़ के पूरे सतिगुरू के चरणों पे गिर जाऊँ ।

निमाणिआ गुरु माण है गुर सतिगुर करे साबास । हउ गुरु सालाहि न रजऊ मै मेले हरि प्रभ पासि ।2। (40-41)

अर्थः- गुरू उनका मान आसरा है जिनका और कोई आसरा नहीं होता । निमाणियों को गुरू दिलासा देता है । गुरू की महानताओं का बयान कर कर के मेरा मन नहीं भरता । गुरू मुझे मेरे पास ही बसते परमात्मा को मिलाने के समर्थ है ।

(पाठी माँ साहिबा)

हक हक हक

(शब्द गुरु प्रत्यक्षता)

ऐक शब्द

उपरोक्त अर्थों में कहे गये गुरू-सतगुरू-शबद-नाम-सच्चा नाम इत्यादि विशेष - विशेषो का केवल और केवल ऐक ही अर्थ विशेष है कि - "रागमई प्रकाशित सुगधित आवाज़ विशेष" । इसके आलावा सारे अर्थ केवल मनमत हैं - गुरूमत का इससे कोई संबंध विशेष नंही हैं ।

"सबद गुरू - सुरत धुन चेला । गुण गोबिंद - नाम धुन बाणी ।"